लघूत्तरीयाः प्रश्नाः

1. दर्शनशव्दस्य कोऽर्थः ?

उ. √दृश् + अनट् प्रत्ययनिष्पण्णः दर्शनशव्दः। दर्शनपेदन अन्तर्दर्शनम्, तत्त्वदर्शनम् वोध्यते न तु चाक्षुषदर्शनम्।

১। প্রশ্নঃ- 'দর্শন' কথার অর্থ কি?

উঃ- √দৃশ্ + অনট্ প্রত্যয়নিষ্পন্ন দর্শন শব্দ। 'দর্শন' বলতে অন্তর্দর্শন বা তত্ত্বদর্শনকে বোঝায়, চাক্ষুষ দর্শনকে নয়।

2. भारतीयदर्शनस्य कौ तावद् विभागौ ?

उ. भारतीयदर्शनस्य द्वौ विभागौ स्तः- आस्तिकं नास्तिकञ्चेति।

২। প্রশ্নঃ-ভারতীয়দর্শনের কয়টি ও কি কি ভাগ?

উঃ- ভারতীয় দর্শনের দুটি ভাগ- আস্তিক ও নাস্তিক দর্শন।

3. आस्तिकः नाम कः ?

उ. 'अस्ती'ति वुद्धिर्यस्य स आस्तिकः। वेदस्य प्रामाण्ये यः विश्वसति सः आस्तिकः।

৩। প্রশ্নঃ- 'আস্তিক' কি?

উঃ- 'অস্তি' বিশিষ্টবুদ্ধি আস্তিক। বেদের প্রামাণ্যে যাঁরা বিশ্বাস করেন তাঁরা আস্তিক।

4. नास्तिकः नाम कः ?

उ. 'नास्ती'ति वुद्धिर्यस्य स नास्तिकः। वेदस्य प्रामाण्ये यः न विश्वसति सः नास्तिकः।

৪। প্রশ্নঃ- 'নাস্তিক' কি?

উঃ- 'নাস্তি' বুদ্ধি বিশিষ্ট নাস্তিক, বেদের প্রামাণ্যে যাঁরা বিশ্বাস করেন না তাঁরা 'নাস্তিক'।

5. कानि तावद् आस्तिकदर्शनानि ?

उ. सांख्यम् योगः न्यायम् वैशेषिकम् मीमांसा, वेदान्तश्चेति षड्दर्शनानि आस्तिकपदवाच्यानि भवन्ति।

৫। প্রশ্নঃ- আস্তিক দর্শন কয়টি ও কি কি?

উঃ- আস্তিক দর্শন ছয়টি-সাংখ্য, যোগ, ন্যায়, বৈশেষিক, মীমাংসা ও বেদান্ত।

6. कानि तावद् नास्तिकदर्शनानि ?

उ. चार्वाक्‌दर्शनम् वौद्धदर्शनम्, जैनदर्शनञ्चेति नास्तिकदर्शनानि।

৬। প্রশ্নঃ- নাস্তিক দর্শন কয়টি ও কি কি?

উঃ- নাস্তিক দর্শন তিনটি- চার্বাক, জৈন ও বৌদ্ধ।

7. आस्तिकदर्शनानां मुख्यवार्ता का अस्ति?

उ. 'आत्मानं विद्धि' इति मुख्यवार्ता आस्तिकदर्शनानाम्।

৭। প্রশ্নঃ- আস্তিক দর্শনের মুখ্য বার্তা কি?

উঃ- 'আত্মনং বিদ্ধি'।

8. भारतीय दर्शनानुसारं दुःखस्य मूलम् किम्?

उ. अविद्या हि दुःखमूलम्।

৮। প্রশ্নঃ- ভারতীয় দর্শন অনুসারে দুঃখের মূলকারণ কি?

উঃ- 'অবিদ্যা হি দুঃখমূলম্' -অবিদ্যাই দুঃখের কারণ।

9. परमपुरुषार्थं किमस्ति?

उ. आत्यन्तिकदुःखनिवृत्तिः हि परमपुरुषार्थम्।

৯। প্রশ্নঃ- 'পরমপুরষার্থ' কি?

উঃ- আত্যন্তিক দুঃখ নিবৃত্তিই হলো পরমপুরষার্থ।

10. 'सर्वदर्शनसंग्रहः' ग्रन्थस्य प्रणेता कोऽस्ति?

उ. माधवाचार्यः।

১০। প্রশ্নঃ- 'সর্বদর্শনসংগ্রহঃ' গ্রন্থের রচয়িতা কে?

উঃ- মাধবাচার্য।

11. भारतीयदर्शनालोचनायां कति किञ्च स्तरं दृश्यते?

उ. भारतीय दर्शनालोचनायां स्तरत्रयं दृश्यते -पूर्वपक्षः, खण्डनम्, उत्तरपक्षश्च।

১১। প্রশ্নঃ- ভারতীয়দর্শনের আলোচনায় কয়টি ও কি কি স্তর পরিলক্ষিত হয়?

উঃ- ভারতীয়দর্শনের আলোচনায় তিনটি স্তর -পূর্বপক্ষ, খণ্ডন ও উত্তরপক্ষ।

12. आस्तिकदर्शनस्य विभागद्वयं किमस्ति?

उ. वेदानुगतदर्शनम् वेदस्वतन्त्रदर्शनञ्च।

১২। প্রশ্নঃ- আস্তিকদর্শনের বিভাগ কয়টি ও কি কি?

উঃ- দুটি বিভাগ -বেদানুগত দর্শন ও বেদস্বতন্ত্র দর্শন।

13. के तावत् वेदानुगतदर्शने?

उ. मीमांसादर्शनम् वेदान्तदशनञ्च।

১৩। প্রশ্নঃ- বেদানুগতদর্শন কয়টি ও কি কি?

উঃ- দুটি -মীমাংসা ও বেদান্ত।

14. कानि तावत् वेदस्वतन्त्रदर्शनानि?

उ. सांख्यं योगः न्यायं वैशेषिकदर्शनं वेदस्वतन्त्रदर्शनम्।

১৪। প্রশ্নঃ- বেদস্বতন্ত্রদর্শন কয়টি ও কি কি?

উঃ- চারটি-সাংখ্য, যোগ, ন্যায় ও বৈশেষিক।

15. ब्रह्मणः स्वरूपं किम्?

उ. ब्रह्म सच्चिदानन्दस्वरूपं चैतन्यस्वरूपञ्च।

১৫। প্রশ্নঃ- ব্রহ্মের স্বরূপ কি?

উঃ- ব্রহ্ম সচ্চিদানন্দস্বরূপ, চৈতন্যস্বরূপ।

16. जड़वादः कोऽस्ति?

उ. कर्मवादिनः मन्यते -जड़मेव जगतः परमतत्वम्।

১৬। প্রশ্নঃ- জড়বাদ কি?

উঃ- যাঁরা মনে করেন জড়ই জগতের পরমতত্ত্ব, তাঁরা জড়বাদী দার্শনিক।

17. कर्मवादीनां मुख्यवक्तव्यं किमस्ति?

उ. कर्मवादिनः मन्यन्ते यत् कर्मफलेन जगत् जीवनञ्च नियन्त्यते।

১৭। প্রশ্নঃ- কর্মবাদের মুখ্য বক্তব্য কি?

উঃ- কর্মবাদীগণ মনে করেন, কর্মফলের দ্বারাই জগৎ ও জীবন নিয়ন্ত্রিত হয়।

18. सूत्रदर्शनस्य क्रमपर्यायः कोऽस्ति?

उ. सूत्रं भाष्यं टीका च।

১৮। প্রশ্নঃ- সূত্রদর্শনের ক্রমপর্যায় কি কি?

উঃ- সূত্র, ভাষ্য ও টীকা।

19. लोकायतदर्शनं किम्?

उ. चार्वाकदर्शनम्।

১৯। প্রশ্নঃ- লোকায়ত দর্শন কি?

উঃ- চার্বাক দর্শন।

20. भारतीय दर्शनस्य मुख्यवक्तव्यं किमस्ति?

उ. 'नाल्पे सुखमस्ति, भूमैव सुखम्।

২০। প্রশ্নঃ- ভারতীয়দর্শনের মুখ্য বক্তব্য কি?

উঃ- 'নাল্পে সুখমস্তি, ভূমৈব সুখম্'-ক্ষুদ্র নয়, বৃহতেই আনন্দ।

21. त्रिकं किम्?

उ. धर्मार्थकाम मोक्षं हि त्रिकम्।

चार्वाकदर्शनम्

लघूत्तरीयाः प्रश्नाः

1. 'चार्वाक्' इति नाम कथं जातम्?

उ. चारु वाक् चार्वाक्। जड़वादमाश्रितानि आपातमधुराणि वाक्यानि आश्रित्य जगज्जीवनव्याख्याकारणात् चार्वाक् इति नाम जातम्। षड्दर्शनसमुच्चयटीकाकृता गुणरत्नेन उक्तम् 'चर्वन्ते पुण्यपापादिकम् वस्तुवीजम् इति चार्वाकाः'।

১। চার্বাক এই নামকরণের কারণ কি?

উত্তর। চারু বাক্ -চার্বাক। জড়বাদকে আশ্রয় করে আপাতমধুর বাক্যে জগৎ ও জীবনের ব্যাখ্যার জন্য 'চার্বাক' এই নামকরণ। টীকাকার গুণরত্ন তাঁর 'ষড়দর্শন সমুচ্চয়' এর টীকায় বলেছেন- 'চর্বন্তে পুণ্যপাপাদিকং বস্তুবীজম্ ইতি চার্বাকাঃ'।

2. चार्वाकदर्शनस्य सम्भाव्यः प्रतिष्ठाता कोऽस्ति?

उ. देवगुरुणा वृहस्पतिना दर्शनमिदं प्रतिष्ठितमिति साधारणतया मन्यते।

২। চার্বাক দর্শনের সম্ভাব্য প্রতিষ্ঠাতা কে?

উত্তর। দেবগুরু বৃহস্পতি।

3. चार्वाकदर्शनम् अन्यत् केन नाम्ना परिचित्म्?

उ. वृहस्पतिदर्शनम्, लोकायतदर्शनम् -इति नाम्नापि परिचितम्।

৩। চার্বাক দর্শন অন্য কি নামে পরিচিত?

উত্তর। বৃহস্পতি দর্শন, লোকায়ত দর্শন।

4. चार्वाकदर्शनस्य उपलव्धः ग्रन्थः कोऽस्ति?

उ. जयराशिभट्टेन सम्पादितः 'तत्त्वोपप्लबसिंहम्' चार्वाकदर्शनस्य उपलव्धः ग्रन्थः।

৪। চার্বাক দর্শনের উপলব্ধ গ্রন্থ কোনটি?

উত্তর। জয়রাশিভট্ট সম্পাদিত 'তত্ত্বোপপ্লবসিংহম্'।

5. चार्वाकदर्शनस्य मुख्यभाष्यकाराः के सन्ति?

उ. आचार्यः जयराशिभट्टः, अजितकेशम्वली गुणरत्नः प्रमुखाः आचार्याः चार्वाकदर्शनस्य मुख्यभाष्यकाराः।

৫। চার্বাক দর্শনের মুখ্য ভাষ্যকার কে কে?

উত্তর। আচার্য জয়রাশিভট্ট, অজিত কেশকম্বলী, গুণরত্ন প্রমুখ।

6. कथं चार्वाकदर्शनस्य लोकायतमिति अभिधा भवति ?

उ. चार्वाकदर्शनम् जड़वादी। चार्वाकदर्शने परलोकम् अस्वीकृतम्। इहलोकसर्वस्वं चार्वाकदर्शनम्। अथ लोकायतम् (लोके इहलोके आयतम् विस्तृतम्) इति नाम्ना अभिधीयते। "तस्य चार्वाकमतस्य लोकायतमित्यन्वर्थमपरं नामधेयम्"-सर्वदर्शन माधवाचार्यः।

৬। চার্বাক দর্শনকে লোকায়ত দর্শন বলা হয় কেন?

উত্তর। জড়বাদী চার্বাকদর্শনে পরলোক অস্বীকৃত। ইহলোকসর্বস্ব চার্বাকদর্শন তাই লোকায়ত দর্শন নামে অভিহিত (লোকে ইহলোকে আয়তম্ বিস্তৃতম্ ইতি)। সর্বদর্শনগ্রন্থে, মাধবাচার্য বলেছেন- 'তস্য চার্বাকমতস্য লোকায়তমিত্যন্বর্থমপরং নামধেয়ম্'।

7. चार्वाकदर्शने स्वीकृतानि तत्त्वानि कानि?

उ. क्षिति-अप्-तेज-मरुदादीनि चतुस्तत्त्वानि स्वीकृतानि चार्वाकदर्शने।

৭। চার্বাক দর্শনে তত্ত্ব কয়টি স্বীকৃত ও কি কি?

উত্তর। চারটি- ক্ষিতি,অপ্, তেজ ও মরুৎ।

8. चार्वाकदर्शने आत्मा किमस्ति?

उ. चैतन्यविशिष्टः देहरेव आत्मा।

৮। চার্বাকমতে আত্মা কি?

উত্তর। চৈতন্যবিশিষ্ঠ দেহই আত্মা।

9. चार्वाकमतानुसारं प्रमाणं किम्?

उ. चार्वाकाः प्रत्यक्षमेव प्रमाणरूपेण स्वीकुर्वन्ति- "प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्"।

৯। চার্বাকমতে প্রমাণ কয়টি ও কি?

উত্তর। একটিই প্রমাণ- প্রত্যক্ষ।

10. चार्वाकानुसारं चैतन्यं कथमुत्पद्यते?

उ. गुड़तण्डुलसंयोगात् यथा मद्यं सृज्यते तथैव भूतचतुष्टयसंयोगात् (क्षिति, अप, तेज, मरुत्) चैतन्यमुत्पद्यते।

১০। চৈতন্যের উৎপত্তি সম্পর্কে চার্বাকমত কি?

উত্তর। গুড় ও তণ্ডুলসংযোগে যেমন মদ্য প্রস্তুত হয়, তেমনি ক্ষিতি, অপ্, তেজ, মরুৎ-এই চারপদার্থের সংযোগে চৈতন্য উৎপন্ন হয়।

11. परलोकविषये चार्वाकमतं किमस्ति?

उ. परलोकं नास्ति। मृत्यौ सर्वं परिसमाप्यते।

১১। পরলোক বিষয়ে চার্বাকমত কি?

উত্তর। পরলোক নেই, মৃত্যুতেই সবকিছু শেষ হয়ে যায়।

12. चार्वाकमते पुरुषार्थः कोऽस्ति?

उ. अर्थं च कामं च चार्वाकाः पुरुषार्थरूपेण स्वीकुर्वन्ति।

১২। চার্বাকমতে পুরুষার্থ কয়টি ও কি কি?

উত্তর। দুটি -অর্থ ও কাম।

13. वेदविषये चार्वाकानां सिद्धान्तः कोऽस्ति?

उ. "त्रयो वेदस्य कर्तारो भण्डधूर्तनिशाचराः।
जर्फरीतुर्फरीत्यादिः पण्डितानां वचः स्मृतम्।

১৩। বেদ বিষয়ে চার্বাকদের সিদ্ধান্ত কি?

উত্তর। 'ত্রয়ো বেদস্য কর্তারো ভণ্ডধূর্তনিশাচরাঃ।
জর্ফরীতুর্ফরীত্যাদিঃ পণ্ডিতানাং বচঃ স্মৃতম্।।'

14. अनुमान विषये चार्वाकमतं किमस्ति?

उ. चार्वाकमते अनुमानमसिद्धम्। व्याप्तिज्ञानं प्रत्यक्षसिद्धम्। अथ अनुमानं प्रत्यक्षमूलम्।

১৪। অনুমান প্রমাণ সম্পর্কে চার্বাকদের অভিমত কি?

উত্তর। ব্যাপ্তিজ্ঞান প্রত্যক্ষসিদ্ধ। অনুমান যেহেতু প্রত্যক্ষমূলা, তাই প্রত্যক্ষের অতিরিক্ত অন্য প্রমাণের অস্তিত্ব নেই।

15. चार्वाकज्ञानतत्वस्य वक्तव्यं किमस्ति?

उ. प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्। प्रत्यक्षमन्तरेण अन्यत् प्रमाणं नास्ति।

১৫। চার্বাকজ্ঞানতত্ত্বের সিদ্ধান্ত কি?

উত্তর। চার্বাকমতে প্রত্যক্ষই একমাত্র প্রমাণ। প্রত্যক্ষ ছাড়া অন্য কোন প্রমাণ নেই

16. चार्वाकानुसारं के तावद् वेदरचयितारः?

उ. भण्ड-धूर्त-निशाचराः वेदरचयितारः इत्येवं मन्यन्ते चार्वाकाः- 'त्रयोवेदस्य कर्तारो भण्डधूर्तनिशाचराः'।

১৬। বেদের রচয়িতাসম্পর্কে চার্বাকদের অভিমত কি?

উত্তর। ভণ্ড, ধূর্ত ও নিশাচরেরা বেদরচয়িতা- 'ত্রয়ো বেদস্য কর্তারো ভণ্ডধূর্তনিশাচরাঃ'।

17. चार्वाकदर्शनात् कश्चित् जनप्रियः श्लोकः उदाहरणीयः?

उ. यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमं कुतः।

১৭। চার্বাকদর্শনের যে কোন একটি জনপ্রিয় শ্লোক উদধৃত কর।

উত্তর। যাবজ্জীবেৎসুখং জীবেৎ ঋণং কৃত্বা ঘৃতং পিবেৎ।
ভস্মীভূতস্য দেহস্য পুনরাগমং কুতঃ।

18. चार्वाकदेहात्मवादं व्याख्यायताम्?

उ. क्षिति-अप-तेज-मरुदिति भूतचतुष्टयेभ्यः उत्पन्ने देहे चैतन्यं स्वाभाविकतया उत्पद्यते। अयं चैतन्यविशिष्टः कायः पुरुषः। तस्मादतिरिक्तं आत्मा नास्ति।

১৮। চার্বাকদেহাত্মবাদ কি?

উত্তর। চৈতন্য ভূতচতুষ্টয় (ক্ষিতি, অপ, তেজ ও মরুৎ) যোগে দেহে স্বাভাবিক নিয়মেই উৎপন্ন হয়। এই চৈতন্যবিশিষ্টদেহই আত্মা।

19. चार्वाकमते अपवर्गः कः भवति?

उ. चार्वाकमते मृत्युरेव अपवर्गः।

১৯। চার্বাক মতে অপবর্গ কি?

উত্তর। মৃত্যুই অপবর্গ।

20. चार्वाकानां अधिविद्या का?

उ. चार्वाकाः जड़वादिनः। ते मन्यन्ते भूतचतुष्टयेभ्यः ऊत्पन्नं आत्मा। कर्मफलं परलोकं नास्त्येव। अथ ते प्रत्यक्षमन्तरेण अनुमाननिर्भरां अधिविद्यां न स्वीकुर्वन्ति।

২০। চার্বাকদের অধিবিদ্য কি?

উত্তর। চার্বাকগণ মনে করেন ভূতচতুষ্টয় থেকে আত্মা উৎপন্ন হয়। কর্মফল বা পরলোক বলে কিছু নেই তাই প্রত্যক্ষব্যতীত অনুমাননির্ভর অধিবিদ্যা ও তাঁরা স্বীকার করেন না।

জৈন দর্শন

১। জৈন দর্শনের সংক্ষিপ্ত বিবরণ দাও।

উত্তর। জয়সূচক 'জি' ধাতু থেকে 'জৈন' শব্দটি গঠিত হয়েছে। যার অর্থ জ
হওয়া। ঋষভদেব থেকে মহাবীর পর্যন্ত (২৪) যে সকল তীর্থঙ্করগণ পূর্ণতা প্রাপ্তি
সিদ্ধিলাভ করেছেন তাঁরাই 'জিন' বা জয়ী। এই সকল সিদ্ধ পুরুষ তীর্থঙ্করগণই জৈ

जैनदर्शनम्

लघूत्तरीयाः प्रश्नाः

1. 'जैन' शव्दस्य कोऽर्थः ?

उ. √जि धातुनिष्पन्नः जैनः शव्दः। जिन् + अण् = जैनः, जितेन्द्रियः इत्यर्थः।

১। 'জৈন' শব্দের অর্থ কি?

উত্তর। √জি -ধাতু নিষ্পন্ন 'জৈন' শব্দ। জিন্ + অণ্ = জৈন, যার অর্থ জিতেন্দ্রিয়।

2. जैनधर्मगुरुः केन नाम्ना परिचितः भवति?

उ. 'तीर्थङ्कर' इति नाम्ना परिचितः भवति।

২। জৈনধর্মগুরু কি নামে অভিহিত হন?

উত্তর। তীর্থঙ্কর।

3. जैनधर्मस्य प्रथमः तथा अन्तिमः तीर्थङ्करश्च कौ ?

उ. प्रथम तीर्थङ्करः-ऋषभदेवः, अन्तिमः तीर्थङ्करः-महावीरः वर्धमानः।

৩। জৈনধর্মের প্রথম তীর্থঙ্কর কে? অন্তিম তীথঙ্কর কে?

উত্তর। প্রথম তীর্থঙ্কর ঋষভদেব। অন্তিম তীর্থঙ্কর মহাবীর বর্ধমান।

4. जैनधर्मस्य प्रधानविभागौ कौ स्तः?

उ. दिगम्वरश्वताम्वरौ।

৪। জৈনধর্মের প্রধান বিভাগ কয়টি ও কি কি?

উত্তর। দুটি - দিগম্বর ও শ্বেতাম্বর।

5. के च दिगम्वराः?

उ. नग्नजैनसन्न्यासिनः दिगम्वराः। ते च रक्षणशीलाः।

৫। দিগম্বর কারা?

উত্তর। নগ্নজৈনসন্ন্যাসীগণ দিগম্বর। তাঁরা রক্ষণশীল।

6. के च श्वेताम्वराः?

उ. श्वेतकौपिणधारिणः जैनसन्न्यासिनः श्वेताम्वराः। ते उदारपन्थिनः।

৬। শ্বেতাম্বর কারা?

উত্তর। শ্বেতকৌপিনধারী সন্ন্যাসীগণ শ্বেতাম্বর। তাঁরা উদারপন্থী।

7. जैनधर्मस्य प्राचीनग्रन्थः कोऽस्ति?

उ. जैनसन्न्यासीदेवरधिसम्पादितः जैनसिद्धान्तः जैनधर्मस्य प्राचीनतमः ग्रन्थः।

৭। জৈন ধর্মের প্রাচীনতম গ্রন্থ কি?

উত্তর। জৈনসন্ন্যাসী দেবরধিসম্পাদিত 'জৈনসিদ্ধান্ত'।

8. जैनसम्मताः पञ्चप्रमाः काः सन्ति?

उ. मति-श्रुति-अवधि-मनःपर्याय-केवलञ्चेति जैनसम्मताः पञ्चप्रमाः।

৮। জৈনমতে পঞ্চপ্রমা কি কি?

উত্তর। মতি-শ্রুতি-অবধি-মনঃ পর্যায়-কেবল এগুলি হল পঞ্চপ্রমা।

9. जैनमतानुसारं प्रमाणं कतिविधम्?

उ. जैनमतानुसारं प्रमाणं त्रिविधम्-प्रत्यक्षम्, परोक्षम्, शव्दश्चेति।

৯। জৈনমতে প্রমাণ কয় প্রকার ও কি কি?

উত্তর। জৈনমতে প্রমান ত্রিবিধ-প্রত্যক্ষ, পরোক্ষ ও শব্দ।

10. शव्दप्रमाणं किम्?

उ. प्रसिद्धग्रन्थात् परमज्ञानीमुखाच्च लव्धं प्रमाणं शव्दप्रमाणम्।

১০। শব্দপ্রমাণ কি?

উত্তর। প্রসিদ্ধ গ্রন্থ থেকে বা পরমজ্ঞানী ব্যক্তির মুখ থেকে প্রাপ্ত জ্ঞানকে শব্দপ্রমাণ বলে।

11. जैनानां 'अधिविद्या' का भवति?

उ. जैनाः वस्तुनः असंख्यान् धर्मान् स्वीकुर्वन्ति -"अनन्तं धर्मात्मकं वस्तु"। अथ ते अनेकान्तवादिनः।

১১। জৈনমতে অধিবিদ্যা কি?

উত্তর। জৈনমতে বস্তু অসংখ্যধর্ম বিশিষ্ট- 'অনন্তং ধর্মাত্মকং বস্তু'। এটাই তাঁদের মতে অনেকান্তবাদ।

12. स्याद्वादः कः भवति?

उ. अनेकान्तवादीजैनदर्शनानुसारं वस्तु अनन्तधर्मविशिष्टम्। न किञ्चित् अवधारनं पूर्णसत्यम्, अपि तु आंशिकसत्यम्। इदम् आंशिकसत्यं 'स्यात्' अभिधाप्राप्तं भवति।

১২। স্যাদ্‌বাদ কি?

উত্তর। অনেকান্তবাদী জৈন দর্শনানুসারে বস্তু অনন্ত ধর্মবিশিষ্ট। এই অবধারণ পূর্ণসত্য নয়, আংশিক সত্য। এই আংশিক সত্য স্যাৎঅভিধা প্রাপ্ত হয়।

13. 'स्यात्' कति विधम्? कानि च तानि?

उ. 'स्यात्' सप्तविधम्। स्यादस्ति, स्याद्नास्ति, स्याद् अस्ति च नास्ति च, स्याद् अव्यक्तम्, स्याद् अस्ति च अव्यक्तम्, स्याद् नास्ति च अव्यक्तम्, स्याद् अस्ति च नास्ति च अव्यक्तं च।

১৩। 'স্যাৎ' কয় প্রকার ও কি কি?

উত্তর। 'স্যাৎ' সাত প্রকার-স্যাদ্ অস্তি, স্যাদ্ নস্তি, স্যাদ্ অস্তি চ নাস্তি চ, স্যাদ্ অব্যক্তম্, স্যাদ্ অস্তি চ অব্যক্তম্, স্যাদ্ নাস্তি চ অব্যক্তম্, স্যাদ্ অস্তি চ নাস্তি চ অব্যক্তং চ।

14. जैनमतानुसारं जीवलक्षणं किम्?

उ. चेतनालक्षणो जीवः।

১৪। জৈন মতানুসারে 'জীবলক্ষণ' কি?

উত্তর। 'চেতনালক্ষণো জীবঃ' চেতনালক্ষণই জীবলক্ষণ।

15. जैनमतानुसारम् आत्मा किम?

उ. आत्मा चैतन्यस्वरूपं ज्ञानस्वरूपञ्च।

১৫। জৈন মতানুসারে আত্মা কি?

উত্তর। জৈনমতানুসারে আত্মা হল চৈতন্যস্বরূপ ও জ্ঞানস্বরূপ।

16. जैन दर्शने 'नयः' कः भवति?

उ. अनन्तधर्मविशिष्टस्य वस्तुनः धर्मविशेषस्य गुणविशेषस्य आंशिकं ज्ञानं 'नयः' इत्युच्यते।

১৬। জৈন দর্শনে 'নয়' কি?

উত্তর। অনন্তধর্ম বিশিষ্ট বস্তুর ধর্মবিশেষের গুণবিশেষের আংশিক জ্ঞান 'নয়' নামে অভিহিত হয়।

17. जैनमतानुसारं द्रव्यं किम्?

उ. जैनमतानुसारं धर्मी एव द्रव्यम्। द्रव्यं गुणपर्याययोः आश्रयः।

১৭। জৈন মতানুসারে 'দ্রব্য' কি?

উত্তর। জৈনমতানুসারে ধর্মীই দ্রব্য। দ্রব্য গুণপর্যায়ের আশ্রয়।

18. जैनदर्शने जीवस्य को विभागः भवति?

उ. जैनदर्शने जीवस्य द्विविधत्वमूक्तम्- मुक्तः वद्धश्च।

১৮। জৈন দর্শনে জীবের কয়টি বিভাগ হয়?

উত্তর। জৈন দর্শনে জীবের দুটি বিভাগ- মুক্ত ও বদ্ধ।

19. जैनदर्शने अजीवस्य को विभागः भवति?

उ. जैनमतानुसारं अजीवः पञ्चविधः भवति। धर्मः, अधर्मः, आकाशः, पुद्गलः, कालश्चेति।

১৯। জৈন দর্শনে অজীবের কয়টি বিভাগ ও কি কি?

উত্তর। জৈন মতে অজীব পাঁচ প্রকারের হয়- ধর্ম, অধর্ম, আকাশ, পুদ্‌গল ও কাল।

20. 'पुद्गलः' को भवति?

उ. जैनदर्शने अजीवस्य तथा जड़स्य विभागविशेषः पुद्गलः।

২০। 'পুদ্‌গল' কি?

উত্তর। জৈন দর্শনে অজীব তথা জড়ের বিভাগ বিশেষ হল পুদ্‌গল।

21. पुद्गलस्य को विभाग भवति?

उ. पुद्गलः द्विविधः-अणुः संघातश्चेति।

২১। পুদ্‌গল কয় প্রকার ও কি কি?

উত্তর। পুদ্‌গল দু প্রকার হয়- অণু ও সংঘাত।

22. जैनदर्शने 'वन्धनं' किं भवति?

उ. जैनदर्शनं कर्मफलं स्वीकरोति। पूर्वकर्मानुसारं भोगादीनां सृष्टिः भवति। भोगवशात् देहधारणं भवति—तदेव वन्धनम्।

২২। জৈনদর্শনে 'বন্ধন' কি?

উত্তর। জৈনদর্শনে কর্মফল স্বীকার করা হয়। পূর্বকর্ম অনুসারে ভোগাদীর সৃষ্টি হয়। ভোগ থেকে দেহধারণ হয়। এটাই হল বন্ধন।

23. जैनमतानुसारं मुक्तिः का भवति?

उ. भोगवासनादीनां त्यागात् पुदगलात् विच्छिन्नता हि मुक्तिः।

২৩। জৈন মতে 'মুক্তি' কি?

উত্তর। ভোগবাসনা ত্যাগ করে পুদ্‌গল বিচ্ছিন্নতাই হল মুক্তি।

24. जैनदर्शनस्य 'त्रिरत्नम्' किं भवति?

उ. सम्यक दर्शनम्, सम्यक् ज्ञानम्, सम्यक चरित्रं जैनानां 'त्रिरत्नम्'।

২৪। জৈন দর্শনে 'ত্রিরত্ন' কি?

উত্তর। জৈনদর্শনে ত্রিরত্ন হল-সম্যক দর্শন, সম্যক জ্ঞান ও সম্যক চরিত্র।

25. पञ्चमहाव्रतः को भवति?

उ. अहिंसा, सत्यम्, अस्तेयः, ब्रह्मचर्यम्, अपरिग्रहश्चेति पञ्चमहाव्रतः।

২৫। পঞ্চমহাব্রত কি?

উত্তর। অহিংসা, সত্য, অস্তেয়, ব্রহ্মচর্য ও অপরিগ্রহ -এগুলি হল পঞ্চমহাব্রত।

26. जैनदर्शने ईश्वरस्य स्थानं किम्।

उ. जैनदर्शनं निरीश्वरवादी। किन्तु जैनमतावलम्बिनः सिद्धपुरुषान् तीर्थङ्करान् ईश्वरत्वेन स्वीकुर्वन्ति।

২৬। জৈনদর্শনে ঈশ্বরের স্থান কিরকম?

উত্তর। জৈনদর্শন নিরীশ্বরবাদী। কিন্তু জৈনমতাবলম্বীগন সিদ্ধপুরুষদেরকে তীর্থঙ্করগণকে ঈশ্বরপূপে স্বীকার করেন।

27. अनुव्रतश्मच महाव्रतश्च कौ भवतः?

उ. गृहीणाम् आचरणीयः धर्मः अनुव्रतः। तथा श्रमनानां आचरणीयः धर्मः महाव्रतः।

২৭। 'অনুব্রত' ও 'মহাব্রত' কি?

উত্তর। গৃহীনিদের আচরণীয় ধর্ম হল অনুব্রত ।

আর -শ্রমের দ্বারা আচরণীয় ধর্ম হল মহাব্রত।

28. अपरिग्रहः को भवति?

उ. 'सर्वभावेषु मूर्च्छायाः त्यागः स्यादपरिग्रहः।

২৮। 'অপরিগ্রহ' কি?

উত্তর। সকল প্রকার মূর্ছার ত্যাগই হল অপরিগ্রহ।

29. जैनदर्शने कर्मणः कतिविधित्वं स्वीकृतम्।

उ. अष्टौ विधित्वम्। तानि च ज्ञानावरणीकर्म, दर्शनावरणीकर्म, वेदनीयकर्म, मोहनीयकर्म, आयुष्कःकर्म, नामकर्म, गोत्रकर्म, अन्तराय कर्मञ्च।

২৯। জৈনদর্শনে কর্ম কত প্রকার স্বীকৃত?

উত্তর। জৈনদর্শনে কর্ম আট প্রকার - জ্ঞানাবরণী কর্ম, দর্শনাবরণী কর্ম, বেদনীয় কর্ম, মোহনীয় কর্ম, অয়ুকর্ম, নামকর্ম, গোত্রকর্ম ও অন্তসায় কর্ম।

30. जैननीतिविद्यायाः सारं किम्?

उ. 'आस्त्रवो भवहेतुः स्यात् संवरो मुख्यकारणम्।

৩০। জৈন নীতি বিদ্যার 'সার' কি?

উত্তর। 'আস্রবো ভবহেতুঃ স্যাৎ সংবরো মুখ্যকারণম্'।